अधिगम (Learning)

(अधिगम का संप्रत्यय, प्रकार, अधिगम के निर्धारक, गैने का अधिगम सिद्धांत)

(Concept of Learning, Types, Determinants of Learning, Gagne Learning Theory)

अधिगम का संप्रत्यय

(Concept of learning)

- सामान्यत: अधिगम एक ऐसी आंतरिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत प्राणी अपने व्यवहार में संशोधन या परिवर्तन करता है।

- लेकिन सभी प्रकार के व्यवहार परिवर्तनों को अधिगम नहीं कहते हैं। तकनीकी रूप से अधिगम उन सभी व्यवहार परिवर्तनों को कहते हैं जो अभ्यास एवं अनुभव द्वारा घटित होते हैं साथी स्थाई प्रकृति के होते हैं।

- अधिगम एक निरंतर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है।

अधिगम की परिभाषाएं

(Definition of learning)

'वुडवर्थ' के अनुसार - "नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं का अर्जन करने की प्रक्रिया अधिगम की प्रक्रिया है"।

'गिलफोर्ड' के अनुसार -" व्यवहार के कारण व्यवहार में आया कोई भी परिवर्तन अधिगम है।"

'स्किनर' के अनुसार -"अधिगम व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की एक प्रक्रिया है।"

अधिगम के प्रकार (Types of learning)

अधिगम को अनेक प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है।

1) अधिगम किए जाने वाले कार्य की प्रकृति के आधार पर-

(i) शाब्दिक अधिगम- शाब्दिक अधिगम से तात्पर्य शब्द भंडार, भाषा कौशल तथा भाषा विषय वस्तु पर आधारित विषय वस्तु को सीखने से है।

(ii) गत्यात्मक अधिगम- गत्यात्मक अधिगम से अभिप्राय शरीर के विभिन्न अंगों को संचालन में तथा शारीरिक कौशलों में निपुणता अर्जित करने से है। नृत्य करना ,व्यायाम, घुड़सवारी आदि इसके उदाहरण हैं।

(iii) समस्या समाधान अधिगम- समस्या समाधान अधिगम के अंतर्गत जीवन में आने वाली नवीन समस्याओं के समाधान के तरीकों को सीखना आता है।

2) **<u>शिक्षण के स्तर के आधार पर अधिगम के प्रकार-</u>**

(i) स्मृति स्तर अधिगम- इस अधिगम में व्यक्ति सूचनात्मक प्रकार की विषय वस्तु को बार-बार दोहराता है और जरूरत पड़ने पर उसकी वैसी ही प्रस्तुति करता है।

(ii) अवबोध स्तर अधिगम- इस स्तर के अधिगम में व्यक्ति अनेक सूचनाओं व तथ्यों आदि के बीच के संबंधों को समझने व उसका अनुप्रयोग करना सीखता है।

(iii) चिंतन स्तर अधिगम- चिंतन स्तर के अधिगम में व्यक्ति समस्याओं का समाधान करना सीखता है।

3) **<u>शैक्षिक उद्देश्यों के परिपेक्ष में तीन क्षेत्र-</u>**

(i) संज्ञानात्मक अधिगम- संज्ञानात्मक अधिगम का संबंध शिक्षार्थी द्वारा विभिन्न तथ्यों का ज्ञान सूचना व अन्य बौद्धिक कौशलों के अर्जन से होता है।

(ii) भावात्मक अधिगम- भावात्मक अधिगम का संबंध व्यक्ति के दृष्टिकोण, मूल्य ,भावों तथा संवेग के द्वारा सीखने से होता है।

(iii) क्रियात्मक अधिगम- इससे तात्पर्य भौतिक तथा गामिक नियंत्रण के द्वारा विभिन्न कौशलों को सीखने से होता है।

अधिगम के निर्धारक

(Determinants of learning)

- ❖ प्रेरणा (Motive)
- ❖ उत्तेजना (Stimuli)
- ❖ पुनर्बलन (Reinforcement)
- ❖ अनुक्रिया (Response)
- ❖ प्रतिधारण (Retention)

गैने का अधिगम सोपानिक सिद्धान्त

(Hierarchy Theory of Learning)

- आर. एन.गैने नामक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक ने सन 1956 में अधिगम की प्रकृति को समझने के लिए अधिगम सोपानिप नामक सिद्धांत दिया।

- इस अधिगम सोपानिकी के 8 वर्गों में एक स्पष्ट अंतर्निहित क्रम निहित है तथा अगला क्रम पिछले क्रम से उच्चतर अथवा जटिलतर होता है।

- गैने के द्वारा प्रस्तुत अधिगम सोपानिकी में प्रयुक्त अधिगम के इन 8 प्रकारों में परस्पर निहित संबंध एवं क्रम व्यवस्था से सीखने की प्रक्रिया एवं उसकी प्रकृति को समझने में महत्वपूर्ण सहायता मिलती है।

गैने की अधिगम सोपानिकी में अधिगम के आठ प्रकार

(Eight Types of Learning in Gagne's Hierarchy of Learning)

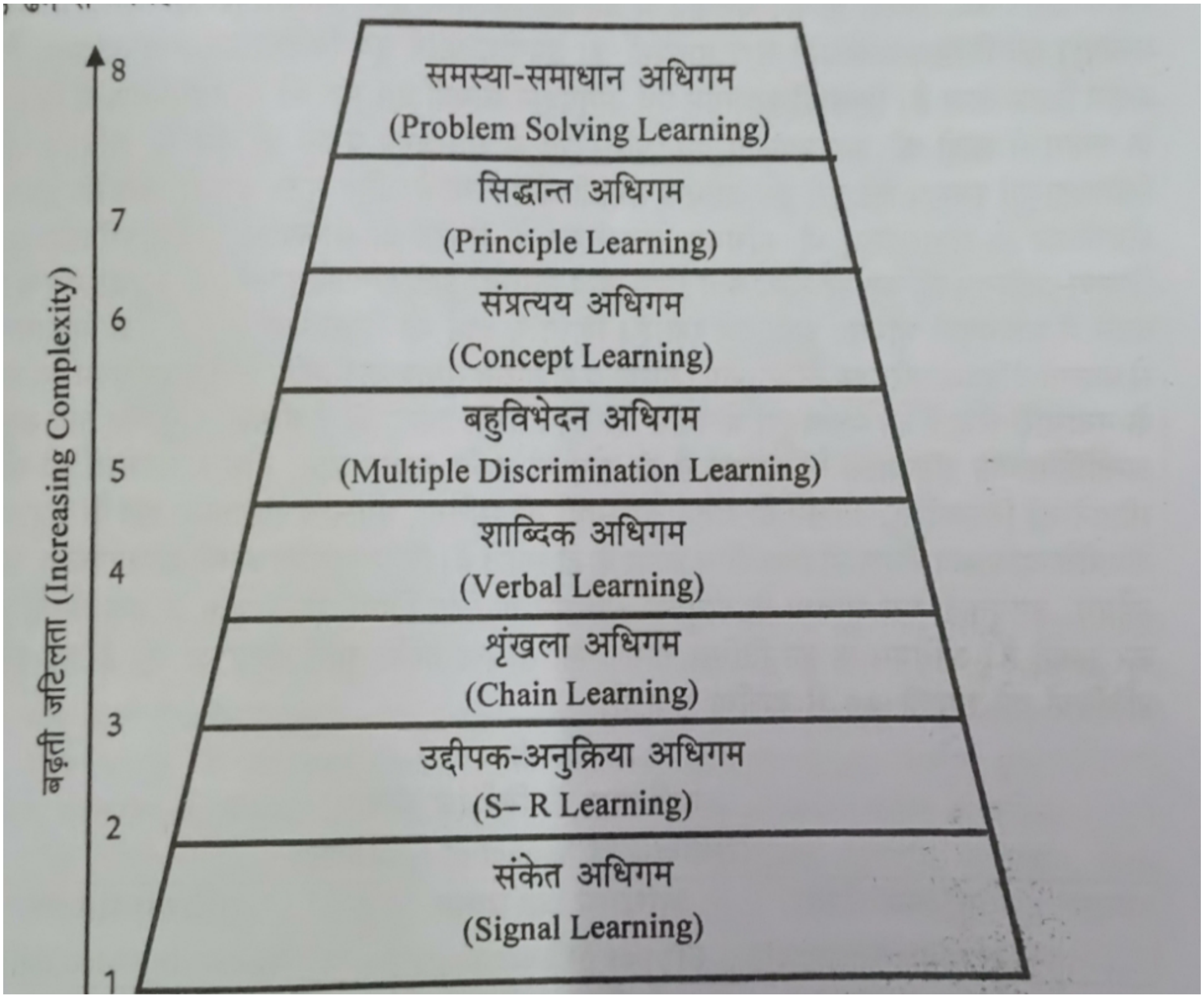

1) <u>संकेत अधिगम(Signal Learning)</u>- संकेत अधिगम को क्लासिकल अनुबंधन भी कहा जा सकता है । इस प्रकार के सीखने में प्राकृतिक उद्दीपक की अनुक्रिया के साथ अन्य कोई उद्दीपक की अनुक्रिया प्रस्तुत करना सीख लेता है। इसमें यांत्रिक ढंग से आदतों का निर्माण किया जाता है ।इस कारण गैने ने इसे सबसे निम्न स्थान दिया है।

2) <u>उद्दीपन अनुक्रिया अधिगम(S-R Learning)</u>- इसे क्रिया प्रसूत अनुबंधन भी कहा जाता है। इस प्रकार का सीखना वस्तुतः स्किनर के द्वारा बताए क्रिया प्रसूत अनुबंधन का परिणाम होता है ।इस प्रकार के अधिगम में धनात्मक अथवा ऋणत्मक पुनर्बलन की सहायता से किसी उद्दीपक के प्रस्तुत करने पर व्यक्ति को वांछित अनुक्रियां करने के लिए प्रेरित किया जाता है ।अनुबंधन बनाने में पुनर्बलन के महत्व के कारण इस प्रकार के अधिगम को संकेत अधिगम से कुछ उच्च स्थिति में रखा गया है।

3) **श्रंखला अधिगम(Chain Learning)-** इसे क्रमिक अधिगम भी कहते हैं। इस प्रकार के अधिगम में अधिगम सामग्री क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित रहती है। तथा प्राणी एक-एक करके अधिगम सामग्री सीख जाता है I जैसे -वर्णमाला, गिनती, पहाड़े आदि।

4) **शाब्दिक अधिगम(Verbal Learning)-** इस अधिगम से तात्पर्य शब्दों ,वाक्यों ,वार्तालाप ,साहित्य, लेखन संबंधी अधिगम से है ।जो शाब्दिक व्यवहार में परिवर्तन लाने से संबंधित रहता है ।व्यक्तियों द्वारा बोले जाने वाले शब्द तथा वार्तालाप वस्तुतः शाब्दिक अधिगम का ही परिणाम होते हैं।

5) **बहु विभेदन अधिगम(Multiple Discrimination Learning)-** बहु विभेदन अधिगम के अंतर्गत प्राणी उसके सम्मुख प्रस्तुत हो रहे अनेक उद्दीप्तको में से इच्छित उद्दीपक को पहचानना एवं तदनुसार अनुक्रिया करना सीखता है। अर्थात वह उसके समक्ष प्रस्तुत अनेक परंतु लगभग समान प्रकृति के अनेक उदीपको में विभेद करना सीख जाता है।

6) <u>संप्रत्यय अधिगम(Concept Learning)</u>- इस प्रकार के अधिगम से तात्पर्य पूर्व अनुभव, प्रशिक्षण अथवा संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के आधार पर संप्रत्यय का निर्माण करने से है। संप्रत्यय के निर्माण के फल स्वरुप ही प्राणी समानताओं व विषमताओं के आधार पर विभिन्न वस्तुओं /व्यक्तियों/ घटनाओं को पहचानता है।

7) <u>सिद्धांत अधिगम (Principle Learning)</u>- सिद्धांत अधिगम अथवा सिद्धांतों का अधिगम स्तर से अभिप्राय सिद्धांतों को समझने ,सीखने से है । सिद्धांतों के आधार पर भावी घटना का अनुमान लगाया जा सकता है, प्रत्यय निर्माण के उपरांत विभिन्न प्रत्ययो में परस्पर निहित संबंधों /क्रमो से संबंधित सिद्धांतों को समझकर ही प्राणी तार्किक ढंग से व्यवहार कर सकता है।

8) <u>समस्या समाधान अधिगम (Problem Solving Learning)</u>- अधिगम का यह प्रकार गैने द्वारा प्रस्तुत अधिगम सोपानिकी का सर्वोच्च स्तर है। समस्या समाधान अधिगम के अंतर्गत प्राणी अपनी समस्याओं का स्वयं समाधान करना सीखता है। इस प्रकार के अधिगम में पूर्व अनुभव तथा प्रशिक्षण के साथ-साथ संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं जैसे अवलोकन, विश्लेषण ,तर्क, चिंतन, विभेदन ,कल्पना आदि की आवश्यकता होती है।